

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 24, इंजीलवाद

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 24 है, इंजीलवाद।

ठीक है, आइए प्रार्थना करें, और फिर हम शुरू करेंगे। हमारे दयालु प्रभु, हम आपको हमारे आगे आने वाले एक और सप्ताह के लिए धन्यवाद देते हैं। हम एक-दूसरे के लिए और एक-दूसरे को सिखाने के अवसरों के लिए आपको धन्यवाद देते हैं। हम आपको पीछे मुड़कर देखने के लिए धन्यवाद देते हैं।

पीछे मुड़कर देखें तो हम इस सम्मेलन के लिए आपका धन्यवाद करते हैं, जो 2017 में सुधार की प्रतीक्षा कर रहा था। और हम आपको धन्यवाद देते हैं कि सब कुछ इतना अच्छा चल रहा है और वक्ताओं का यहाँ आना और सुरक्षित यात्रा करके घर लौटना। इसलिए, हम इसके लिए आभारी हैं।

और अब हम इस सप्ताह का, साथ में बिताए समय का, और साथ में सीखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। और हम प्रार्थना करते हैं कि अगले सप्ताह थैंक्सगिविंग की छुट्टियों के दौरान एक अच्छा सप्ताह हो और प्रार्थना करते हैं कि लोगों की यात्रा अच्छी और सुरक्षित हो। और फिर थैंक्सगिविंग के बाद आने वाले सप्ताह का।

इसलिए, जैसे-जैसे हम अपने सेमेस्टर के अंत के करीब पहुँच रहे हैं, हमने जो सीखा है उसके लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं। हम उन पुरुषों और महिलाओं के लिए आपको धन्यवाद देते हैं जिन्होंने ईसाई धर्मशास्त्र को इस तरह से आकार दिया है, कभी-कभी अपने स्वयं के बलिदान के बिंदु तक, जैसा कि हम डिट्रिच बोनहोफ़र के साथ देखेंगे। इसलिए, हम इसके लिए आपको धन्यवाद देते हैं। इसलिए, हम प्रार्थना करते हैं कि आप आज और हमारे साथ रहने के शेष समय के लिए हमारे साथ रहें। और हम ये बातें मसीह के नाम पर प्रार्थना करते हैं। आमीन।

ठीक है। हम वहीं हैं जहाँ हमें होना चाहिए। इसलिए, हम इस बात से खुश हैं।

हम 20वीं सदी के ईसाई धर्म और 20वीं सदी के इंजीलवाद को आकार देने वाली ताकतों पर काम कर रहे हैं। और अगर मैं समझ गया, तो बस एक मिनट के लिए यहाँ वापस आ जाइए। हमने कुछ लोगों का ज़िक्र किया है।

आपको मुझे याद दिलाना होगा कि हम यहाँ तक कहाँ पहुँचे हैं। हमने बिली ग्राहम का ज़िक्र किया, है न? वे एक वास्तविक शक्ति थे, इसमें कोई संदेह नहीं है, और आज भी 95 वर्ष की आयु में हैं, उन्होंने अभी अपना अंतिम उपदेश दिया है, और वे एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति हैं और एक सार्वजनिक व्यक्ति बन गए हैं, जैसा कि इस टाइम लेख और टाइम कवर और टाइम लेख से

पता चलता है। मुझे लगता है कि हमने हेरोल्ड जॉन ओकेंगा का जिक्र किया और बताया कि वे कितने महत्वपूर्ण थे।

और क्या आपने उल्लेख किया, मेरा मतलब है, क्या आपने किसी व्याख्यान में देखा, उनका नाम काफी प्रमुख था? मुझे नहीं पता कि आप में से कोई भी उस समय वहां था या नहीं, लेकिन उनका नाम काफी प्रमुख था क्योंकि उन्होंने हेरोल्ड ओकेंगा का उल्लेख किया था। क्या हम ओकेंगा पर ही रुक गए? दो और नाम हैं। क्या हमने कार्ल एफएच हेनरी और फिर एडवर्ड कार्नेल का उल्लेख किया? क्या हमने उन दो नामों का उल्लेख किया? ठीक है।

इस सब को आकार देने वाली ताकतों और लोगों के संदर्भ में उल्लेख करने के लिए कुछ और नाम हैं। और मैंने पहले कार्ल एफएच हेनरी का उल्लेख किया था, लेकिन मेरे पास उनकी तारीखें नहीं थीं। इसलिए अब हमें उनकी तारीखें मिल गई हैं।

कार्ल एफएच हेनरी एक तरह से कट्टरपंथ की भावना में पले-बढ़े थे, और वे ही थे जो अलग हो गए और हाल ही में उनकी मृत्यु हो गई। मेरा मतलब है, जहाँ तक कुछ अन्य लोगों का सवाल है, लेकिन 2003। और फिर एडवर्ड जे. कार्नेल भी एक महत्वपूर्ण नाम है।

एडवर्ड जे. कार्नेल सबसे महत्वपूर्ण धर्मशास्त्री बन गए, मैं कहूंगा, इंजील आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण धर्मशास्त्री। उन्होंने एक किताब लिखी जिसका नाम है ऑर्थोडॉक्सी क्या है? और वह एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण धर्मशास्त्री थे। कार्ल एफएच हेनरी ने कार्नेल की तुलना में बहुत अधिक लिखा क्योंकि 1967 में कार्नेल की मृत्यु बहुत पहले हो गई थी।

इसलिए, उनकी मृत्यु बहुत कम उम्र में ही हो गई। इसलिए, कार्ल एफएच हेनरी उनसे लंबे समय तक जीवित रहे और इसके लिए, इंजीलवाद के लिए एक धर्मशास्त्री के रूप में भी जाने गए। अब, दोनों व्यक्ति, साथ ही ओकेंगा, फुलर थियोलॉजिकल सेमिनरी की स्थापना में प्रभावशाली थे।

फुलर थियोलॉजिकल सेमिनरी की स्थापना 1947 में हुई थी, और इसे देश में प्रमुख इंजील सेमिनरी के रूप में स्थापित किया गया था। इंजील की सोच को वास्तव में फैलाने के लिए, उन्होंने हेनरी और कार्नेल जैसे लोगों को काम पर रखा। उन्होंने उन्हें बहुत अच्छे वेतन और बहुत कम शिक्षण जिम्मेदारियों पर काम पर रखा, ताकि ये लोग लिख सकें।

और इसलिए ये लोग इंजीलवाद के विचारों को व्यापक विद्वान समुदाय तक पहुंचा सकते थे। और इसलिए, वे प्रकाशित करने में सक्षम थे। और अब, इस सप्ताहांत, आपने कुछ बहुत ही उल्लेखनीय बातें सुनीं, हम उनके बारे में बाद में बात करेंगे, लेकिन आपने कुछ बहुत ही उल्लेखनीय इंजील धर्मशास्त्रियों को सुना जो हेनरी और कार्नेल जैसे लोगों के कंधों पर खड़े होकर ऐसा करने में सक्षम रहे हैं।

तो, मार्क नोल खुद को स्पष्ट रूप से इंजीलवादी मानते हैं। बीसन के साथी, टिमोथी जॉर्ज, खुद को स्पष्ट रूप से इंजीलवादी मानते होंगे। लेकिन इन लोगों ने पूरी बात शुरू की।

फुलर के पहले अध्यक्ष हेरोल्ड ओकेंगा थे। इसलिए, हेरोल्ड ओकेंगा फुलर के पहले अध्यक्ष बने। उन्होंने नेतृत्व किया। और यह तब हुआ जब उनके पास अभी भी पार्क स्ट्रीट चर्च था।

इसलिए, उन्हें बोस्टन और पासाडेना के बीच, पार्क स्ट्रीट चर्च और फुलर थियोलॉजिकल सेमिनरी के बीच काफी सालों तक आना-जाना करना पड़ा। तो यह दिलचस्प था। लेकिन ये निश्चित रूप से कुछ नेता हैं, इंजीलवाद के शुरुआती नेता, जिन्हें मैं इंजीलवाद को आकार देने वाली ताकतें कहूंगा।

हम कुछ ही मिनटों में कुछ और देखेंगे। तो, मैं इंजीलवाद को आकार देने वाली कुछ और ताकतों का जिक्र करना चाहूंगा। एक और बात: अब हम लोगों से हटकर कुछ और बातें बताएँगे।

लेकिन 1942 में, हमने जिन इवेंजेलिकल्स के बारे में बात की है, ओकेंगा और हेनरी जैसे लोगों और अन्य लोगों ने नेशनल एसोसिएशन ऑफ इवेंजेलिकल्स, एनएई का गठन किया। अब, यह अमेरिका में इवेंजेलिकलिज्म का एक बहुत ही महत्वपूर्ण आकार था क्योंकि यहीं पर, 1942 में, लोगों के इस समूह ने खुद को कट्टरपंथ से सार्वजनिक रूप से अलग कर लिया था। उन्होंने कट्टरपंथ के सिद्धांतों की सराहना की, हालाँकि सभी सिद्धांतों की नहीं, लेकिन उन्होंने कट्टरपंथ के कई सिद्धांतों की सराहना की।

लेकिन उन्हें कट्टरपंथियों की आपसी लड़ाई पसंद नहीं थी। और उनमें से एक ने कहा कि जब कट्टरपंथियों ने दूसरे लोगों से लड़ना बंद कर दिया, तो वे आपस में ही लड़ने लगे। और यह सच था।

ये लोग खुद को इससे अलग करना चाहते थे और जो उन्हें लगता था कि बौद्धिकता विरोधी या कट्टरपंथ है, उससे भी अलग होना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने उस समय नेशनल एसोसिएशन ऑफ इवेंजेलिकल्स का गठन किया। इसलिए यह वास्तव में महत्वपूर्ण हो गया, जिसने इसे आकार दिया।

इसे आकार देने वाला दूसरा रूप था क्रिश्चियनिटी टुडे। उन्होंने क्रिश्चियनिटी टुडे नाम से एक प्रकाशन शुरू किया। इसकी शुरुआत 1956 में हुई थी।

जब हमने प्रोटेस्टेंट उदारवाद के बारे में बात की, तो हमने बताया कि उनके पास क्रिश्चियन सेंचुरी नामक एक पत्रिका थी, जो 20वीं सदी की शुरुआत में शुरू हुई थी। 1956 में ईसाई धर्म टुडे के साथ इवेंजेलिकल्स आए, और उनकी अपनी पत्रिका थी। हुआ यह कि क्रिश्चियनिटी टुडे ने क्रिश्चियन सेंचुरी से लाखों की संख्या में बिक्री शुरू कर दी।

मेरा मतलब है, क्रिश्चियनिटी टुडे खरीदने वाले लोगों की संख्या और क्रिश्चियन सेंचुरी खरीदने वाले लोगों की संख्या के बीच कोई तुलना नहीं थी। लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि उदारवाद दिवालिया हो चुका था। इंजीलवाद सामने आ रहा था।

और इसलिए, क्रिश्चियन सेंचुरी आज भी मौजूद है और अभी भी इसका काफी व्यापक प्रसार है। कुछ इंजीलवादी, मैं यह नहीं बताऊंगा कि कौन हैं, लेकिन कुछ इंजीलवादी क्रिश्चियनिटी टुडे की

काफी आलोचना करते हैं क्योंकि जब इसकी शुरुआत हुई थी, तो यह धर्मशास्त्र पर बहुत केंद्रित था। मेरा मतलब है, इसके सभी लेख और लेखन बुनियादी ईसाई धर्मशास्त्र और धार्मिक श्रेणियों, धार्मिक शब्दों और बाइबिल धर्मशास्त्र पर बहुत केंद्रित हैं।

कुछ लोगों को लगता है कि क्रिश्चियनिटी टुडे का ध्यान पादरी मंत्रालय पर अधिक है, थोड़ा और ईसाई धर्म-लाइट पर। इसलिए, ईसाई धर्म टुडे के स्थान के बारे में इंजीलवादियों के बीच इस तरह की चर्चा है। इसलिए, सालों पहले, मैं यह कोर्स पढ़ा रहा था, और मुझे बहुत सारे छात्र मिले, और मैं उन्हें बहुत अच्छी तरह से जानता था, लेकिन मैं सभी को नहीं जानता था।

इसलिए, मैंने क्रिश्चियनिटी टुडे की कुछ आलोचनाएँ कीं। मुझे नहीं पता था कि छात्रों में से एक के पिता क्रिश्चियनिटी टुडे के संपादक थे। इसलिए व्याख्यान के अंत में मुझे इस बात का एहसास हुआ।

मुझे लगता है कि मैं अपने मन की गहराई में यह बात जानता था, लेकिन व्याख्यान के अंत में मुझे यह बात समझ में आई। लेकिन मुझे यह तय करना था: क्या मुझे इसे ऐसे ही रहने देना चाहिए और देखना चाहिए कि क्या वह इस पर नाराज़ होता है या नहीं, इसे ऐसे ही रहने देना चाहिए। मैंने इसे जाने दिया, और मैंने इसे बोर्ड के सामने जाने दिया।

लेकिन क्रिश्चियनिटी टुडे की कुछ आलोचनाएँ, कि यह जिस उद्देश्य से बनाया गया था, उससे थोड़ा हल्का हो गया है, मुझे लगता है कि शायद ये आलोचनाएँ योग्य हैं। फिर भी, यह अभी भी महत्वपूर्ण है। साथ ही, इंजीलवाद को आकार देने के संदर्भ में, निश्चित रूप से कई चर्च हैं, चाहे वे संप्रदायवादी हों या नहीं, चाहे वे वास्तव में संप्रदायवादी चर्च हों या नहीं, लेकिन वे खुद को इंजीलवादी के रूप में पहचानते हैं।

तो, आपको बहुत सारे बैपटिस्ट चर्च, या मण्डली चर्च, या यहाँ तक कि एंग्लिकन चर्च भी मिल जाएँगे। लेकिन पहली पहचान यह होगी कि हम इंजीलवादी हैं। हम नेशनल एसोसिएशन ऑफ इवेंजेलिकल्स की शिक्षाओं से सहमत होंगे, या हम क्रिश्चियनिटी टुडे द्वारा लिखी गई बातों से सहमत होंगे।

तो, ऐसे बहुत से चर्च हैं जो निश्चित रूप से 20वीं सदी के इंजीलवाद को आकार देने वाली ताकतें हैं। साथ ही, निश्चित रूप से, ऐसे कई कॉलेज और सेमिनरी हैं जो इंजीलवाद से जुड़े हैं। हम पहले ही फुलर सेमिनरी और निश्चित रूप से गॉर्डन के बारे में बात कर चुके हैं।

जब हमने एडोनाई और जडसन के बारे में बात की, तो गॉर्डन की स्थापना 1889 में हुई थी। हम एक और साल में अपनी 125वीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं। बैरिंगटन कॉलेज की स्थापना 1900 में हुई थी।

और फिर 1985 में गॉर्डन ने हमारा कार्यभार संभाला। और हम पहले ही फुलर थियोलॉजिकल सेमिनरी का उल्लेख कर चुके हैं। आप इसमें गॉर्डन-कॉनवेल थियोलॉजिकल सेमिनरी, एस्बरी थियोलॉजिकल सेमिनरी या डलास थियोलॉजिकल जैसी चीजें जोड़ सकते हैं।

मेरा मतलब है, आप 1947 में स्थापित बहुत से सेमिनारियों को जोड़ सकते हैं। हालाँकि, प्रारंभिक इंजीलवाद के संदर्भ में, कॉलेज और सेमिनरी निश्चित रूप से इंजीलवाद के साथ पहचान करते हैं। गॉर्डन कॉलेज, बस इतना ही कि आप स्पष्ट हैं, गॉर्डन कॉलेज खुद को एक इंजील संस्थान के रूप में पहचानता है।

हम गॉर्डन कॉलेज के लिए इवेंजेलिकल शब्द का इस्तेमाल करते हैं। गॉर्डन कॉलेज की ओर से यह बहुत सचेत है कि हमने खुद को कट्टरपंथी कॉलेज के रूप में नहीं पहचाना। हम इवेंजेलिकल शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

अब, मुझे इस बात में दिलचस्पी होगी कि क्या आपको लगता है कि गॉर्डन कॉलेज के छात्र, क्या आपको लगता है कि वे जानते हैं कि इस शब्द का क्या मतलब है। या क्या आपको लगता है कि गॉर्डन कॉलेज में आने वाले छात्र, क्या आपको लगता है कि गॉर्डन कॉलेज का हर छात्र मुझसे कह पाएगा, मुझे पता है कि गॉर्डन कॉलेज एक इंजील कॉलेज है? क्या आपको लगता है कि गॉर्डन कॉलेज के छात्रों के दिमाग में यह सबसे ऊपर होगा या नहीं? ठीक है। तो फिर इसका क्या मतलब है, यह पहचानें। तो, कुछ छात्रों के लिए, लेकिन आम तौर पर छात्रों के लिए, यह शब्द नहीं होगा; हम इसका इतना उपयोग करते हैं कि यह आम तौर पर उनके लिए एक अजीब शब्द न हो।

ठीक है. ठीक है.

इसलिए, जब वे गॉर्डन में आते हैं, तो वे गॉर्डन के बारे में यही सोचते हैं। इसी कारण से उन्होंने हस्ताक्षर किए; यह गैर-सांप्रदायिक है। यह दिलचस्प है।

ठीक है। खैर, निश्चित रूप से, हमने इंजीलवाद को जो पहचान चिह्न दिए हैं, उनका उपयोग निश्चित रूप से इंजीलवाद को आने वाले लोगों को समझाने के लिए किया जा सकता है। ये ताकतें इंजीलवाद को आकार देती हैं और ये इतनी महत्वपूर्ण क्यों हैं। हम निश्चित रूप से गॉर्डन में आने वाले लोगों को यह समझा सकते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

क्या कोई और भी इस बारे में बात कर रहा है? क्या आप सभी को एहसास हुआ कि जब आप गॉर्डन कॉलेज में आए थे, तो क्या आप अपने पहले दिन के लिए दरवाज़े पर कदम रखते समय और अपने छात्रावास में खुद को रखते समय खुद से कह पाए थे, आपने खुद से कहा, यह एक इंजील कॉलेज है। क्या यह महत्वपूर्ण था? या हाँ, रूथ। ठीक है।

ठीक है। इसका क्या मतलब है। ठीक है।

ठीक है. ठीक है. हाँ.

ठीक है। क्या कोई और भी इंजील आंदोलन के लिए है? ठीक है। वैसे भी, हमारे पास इंजीलवाद के लिए कुछ चिह्न हैं और कुछ चीजें हैं जो इंजीलवाद की पहचान करती हैं।

मैं बस एक मिनट में इंजीलवाद के सिद्धांतों के बारे में बताने जा रहा हूँ। तो, मुझे लगता है कि इससे हम ठीक-ठीक बता देंगे कि इंजीलवाद क्या है या यह क्या मानता है। मैं बस बैरिंगटन कॉलेज का ज़िक्र करना चाहूँगा।

हमने यह तस्वीर पहले भी देखी है: दाईं ओर बैरिंगटन कॉलेज और बाईं ओर गॉर्डन कॉलेज। फिर, हम अभी भी जिस स्थिति में हैं, उसके संदर्भ में, हम अभी भी 20वीं और 21वीं सदी के इंजीलवाद को आकार देने वाली ताकतों के अधीन हैं। सिद्धांतों और फिर कमजोरियों में जाने से पहले, मैं यह उल्लेख करना चाहता हूँ कि इंजीलवादियों ने कई उल्लेखनीय विद्वानों को जन्म दिया है।

आपने इस सप्ताहांत उनमें से कुछ के बारे में सुना है। तो, इंजीलवाद ने हमें कुछ बहुत ही उल्लेखनीय लोग दिए हैं। उदाहरण के लिए, यहाँ कुछ नाम दिए गए हैं, जिनसे आपको परिचित होना चाहिए।

जॉर्ज मार्सडेन एक महान इतिहासकार हैं जिन्हें अमेरिकी जीवन के महान इतिहासकारों में से एक माना जाता है। उन्होंने अभी, ओह, चार साल पहले, शायद, जोनाथन एडवर्ड्स की निर्णायक जीवनी प्रकाशित की है, जो पढ़ने के लिए वाकई बहुत बढ़िया है अगर आपके पास समय है; इसे अपनी गर्मियों की पढ़ने की सूची में शामिल करें। लेकिन वह एक इतिहासकार हैं।

प्रशिक्षण के अनुसार, वे अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं, लेकिन उन्होंने नोटे डेम में अध्यापन का काम पूरा किया, जो कि बहुत ही रोचक है, वैसे, कि एक इवेंजेलिकल नोटे डेम में पढ़ाता है, जो कि एक रोमन कैथोलिक स्कूल है। लेकिन मार्क नोल भी ऐसा ही करते हैं। मार्क नोल, जिनके बारे में हमने शुक्रवार की रात को सुना, वे कई वर्षों तक व्हीटन कॉलेज से जुड़े रहे।

वह एक इंजीलवादी, प्रतिबद्ध इंजीलवादी हैं, और जैसा कि जेसी ने बताया, मैं उनके इंजीलवादी होने के तरीके से रोमांचित था; वास्तव में, शब्द के बारे में एक विद्वान के रूप में उनकी प्रस्तुति में, शब्द का कार्य हमें मसीह के ज्ञान तक पहुंचाना है। लेकिन वह केवल इसलिए हमसे ऐसा नहीं कहते क्योंकि वह गॉर्डन कॉलेज में हैं। मैंने उन्हें मिश्रित श्रोताओं के साथ सार्वजनिक संबोधनों में ऐसा कहते सुना है।

लेकिन अब वह नोटे डेम में पढ़ाते हैं, जो कि दिलचस्प भी है। जैसा कि आप जानते हैं, वह बहुत प्रसिद्ध हैं। इतिहासकार निकोलस वाल्टर्सडॉर्फ एक प्रसिद्ध दार्शनिक हैं जो खुद को इंजीलवादी मानते हैं और येल में पढ़ाते हैं।

क्या आप में से किसी ने वाल्टर्सडॉर्फ को बोलते हुए सुना है? मैंने उन्हें बोलते हुए सुना है, लेकिन वह बहुत ही रोचक था। मैं बस कुछ का ज़िक्र कर रहा हूँ। मैंने एलिस्टेयर मैकग्राथ का ज़िक्र किया है, और मैं बाद में उनकी एक किताब पढ़ने जा रहा हूँ, लेकिन एलिस्टेयर मैकग्राथ ऑक्सफ़ोर्ड में पढ़ाते हैं।

वह एक एंग्लिकन पादरी है। वैसे, उसके पास दो पीएचडी हैं। उसके पास जीव विज्ञान में पीएचडी और धर्मशास्त्र में पीएचडी है, इसलिए यह आदमी विज्ञान और धर्मशास्त्र में बहुत अच्छा है।

हममें से ज़्यादातर लोगों के पास सिर्फ़ एक ही हो सकता है, लेकिन उन्हें दो मिल गए, इसलिए एलिस्टेयर मैकग्राथ एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति हैं। और मैं बस यही कहना चाहता हूँ। एलन वोल्फ ने अटलांटिक मंथली के लिए द ओपनिंग ऑफ़ द इवेंजेलिकल माइंड नामक एक लेख लिखा।

अब, एलन वोल्फ बिल्कुल भी इंजीलवादी नहीं है। वह अटलांटिक मंथली के लिए एक अच्छे यहूदी लेखक हैं। यह लेख, वास्तव में मेरे पास लेख की एक प्रति यहाँ है।

यह लेख बहुत रोचक है क्योंकि एलन वोल्फ इस लेख पर व्याख्यान देने के लिए कैम्पस में मौजूद थे। अटलांटिक मंथली की लंबी कहानी को संक्षेप में कहें तो अटलांटिक मंथली एलन वोल्फ के पास आया और कहा, अमेरिका में इंजीलवाद नाम की एक चीज है, और हम इसके बारे में कुछ नहीं जानते, तो क्या आप जाकर इस पर शोध करना चाहते हैं और यह सब पता लगाना चाहते हैं? एलन वोल्फ कई इंजील संस्थानों में गए और उनमें से एक जिसने उन्हें वास्तव में प्रभावित किया, मुझे यह कहना होगा, भले ही वह हमारा प्रतिस्पर्धी हो, वह इलिनोइस के व्हीटन में व्हीटन कॉलेज था। और मुझे नहीं पता कि उन्हें इंजीलवादियों के बीच क्या मिलने की उम्मीद थी, लेकिन जब उन्होंने इंजील संस्थानों को देखा और कुछ इंजील नेताओं से मिले, और इंजील चर्चों में गए, तो उनके खुद के अनुसार, एलन वोल्फ बहुत प्रभावित हुए क्योंकि उन्हें विद्वता का एक स्तर मिला।

उन्होंने प्रतिबद्धता का एक स्तर पाया। उन्होंने उपदेश का एक ऐसा स्तर पाया जिसकी उन्होंने कभी उम्मीद नहीं की थी। मुझे लगता है कि ऐसा न होने का कारण यह था कि उन्हें लगा कि वे कट्टरपंथी जगहों और हर जगह जा रहे हैं।

और मुझे नहीं पता कि कोई था भी या नहीं। क्या आप में से कोई संयोग से मैथ्यू लुंडिन के व्याख्यान में गया था? मैथ्यू लुंडिन, व्हीटन कॉलेज के इतिहासकार? क्या आप वहाँ गए थे? क्योंकि उनके पिता, मेरे बहुत करीबी दोस्त, रोजर लुंडिन, व्हीटन में अंग्रेजी पढ़ाते हैं। एलन वोल्फ ने जिन कक्षाओं में भाग लिया और लेख में उल्लेख किया, उनमें से एक रोजर लुंडिन की कक्षा थी, जो व्हीटन में अंग्रेजी पढ़ाते हैं। वह रोजर लुंडिन की विद्वता के स्तर से बहुत प्रभावित थे।

अब मैथ्यू उनका बेटा है, इसलिए हमें व्हीटन में पढ़ाने वाले लुंडिन की दूसरी पीढ़ी मिली, लेकिन वह इस इंजील स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाने वाले रोजर लुंडिन में जो विद्वता का स्तर पाया, उससे इतना प्रभावित हुआ कि वह और रोजर बहुत अच्छे दोस्त बन गए। कभी-कभी, वे इस लेख के बारे में सार्वजनिक रूप से एक साथ व्याख्यान देते थे। इसलिए, एलन वोल्फ का दिमाग, जैसा कि मैं कहता हूँ, वह खुद इंजील नहीं है।

लेकिन अगर आप जानना चाहते हैं कि इंजीलवाद क्या है, तो इंजीलवादी दिमाग के खुलने पर यह लेख बहुत दिलचस्प होगा। तो, यह रहा। मैंने सिर्फ़ कुछ नामों का जिक्र किया है।

मैं और भी कई नाम बता सकता हूँ। मेरे मित्र रोजर लुंडिन एक अच्छे उदाहरण हैं। और उनका बेटा अब एक अच्छे उदाहरण के तौर पर पढ़ा रहा है।

तो, हम यहाँ हैं। अब, आइए इंजीलवाद के सिद्धांतों पर चलते हैं। आम तौर पर इंजीलवाद क्या करता है, और यह किसके लिए प्रतिबद्ध है? एक आंदोलन के रूप में यह क्या करता है, यह क्या मानता है? इसकी प्रतिबद्धता क्या है? तो, ठीक है, मैं कुछ का उल्लेख करने जा रहा हूँ।

एक बात यह है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि इंजीलवाद ने कट्टरवाद के एक बहुत शक्तिशाली बौद्धिकता-विरोधीवाद पर काबू पाने का प्रयास किया। इसमें कोई संदेह नहीं है। इंजीलवाद, हेनरी और कार्नेल जैसे इंजीलवादियों ने पाया कि वे वास्तव में बौद्धिकता-विरोधी परंपरा, और निश्चित रूप से एक वैज्ञानिक-विरोधी परंपरा, निश्चित रूप से एक सांस्कृतिक-विरोधी परंपरा में पले-बढ़े थे।

मेरा मतलब है, इंजीलवाद का पहला सिद्धांत, एक तरह से, उस पर काबू पाना है। और यह देखना कि हम पूरी तरह से मन, आत्मा, शरीर और हर तरह से ईश्वर की छवि में बनाए गए हैं। हम ईश्वर की नैतिक छवि हैं, लेकिन इसमें हमारे मन से ईश्वर से प्रेम करना, साथ ही ईश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना, इत्यादि शामिल हैं।

इसलिए, इस बौद्धिकता-विरोधी भावना पर काबू पाकर, जिसे वे वास्तव में बुरा मानते थे, उनमें से बहुत से लोग, आप जानते हैं, उदाहरण के लिए, मार्क नूह के साथ समाप्त होते हैं। तो, ठीक है, एक दूसरी बात जो निश्चित रूप से, मुझे नहीं पता, मार्क इंजीलवादियों को शास्त्र के बारे में बहुत उच्च दृष्टिकोण होगा। अब, इंजीलवादी इस बात पर पूरी तरह सहमत नहीं हैं कि इसे कैसे पहचाना जाए, लेकिन निश्चित रूप से, वे बाइबल की प्रेरणा या बाइबल के अधिकार जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं।

कुछ इंजीलवादी एक शब्द का इस्तेमाल करते हैं, बाइबिल की अचूकता, लेकिन फिर भी, यह वास्तव में बाइबिल की कथा, बाइबिल के लेखकों के इरादे के प्रति प्रतिबद्धता है। वे हमें क्या बताना चाहते हैं? और मुख्य रूप से, वे हमें मसीह के बारे में क्या बताना चाहते हैं? तो, इंजीलवादियों ने क्या किया है, आपने इसे इस सप्ताहांत व्याख्यानों में सुना, इंजीलवादियों ने क्या किया है, आपने इसे मार्क नूह के साथ सुना, इंजीलवादियों ने जो किया है वह ईश्वर के वचन के रूप में धर्मग्रंथों की सुधारवादी समझ पर वापस आने का प्रयास है, जो ईश्वर के वचन के बारे में है। जैसा कि मार्क नोल ने कहा, धर्मग्रंथ, सुधारकों द्वारा धर्मग्रंथों का उद्देश्य लोगों को मसीह के ज्ञान तक पहुंचाना था।

यह निश्चित रूप से इंजीलवादियों के विश्वास को व्यक्त करता है। धर्मग्रंथ ईश्वर का वचन है। मैं बस एक किताब से उद्धरण देना चाहता हूँ।

तो, यह किताब है। यह एलेस्टेयर मैकग्राथ द्वारा लिखी गई है, जो फिर से ऑक्सफोर्ड के प्रोफेसर हैं, लेकिन एक प्रतिबद्ध इंजीलवादी हैं। वैसे, किताब के शीर्षक पर ध्यान दें।

इसका नाम है इंजीलवाद और ईसाई धर्म का भविष्य। यह एक दिलचस्प शीर्षक है क्योंकि उन्हें यकीन है कि ईसाई धर्म का भविष्य इंजीलवादियों के हाथों में है, कि इंजीलवादी अपनी प्रतिबद्धताओं के कारण ईसाई धर्म के भविष्य की ओर अग्रसर होने जा रहे हैं। जब हम शास्त्र के बारे में बात करते हैं तो वह कुछ उल्लेख करते हैं।

एक छोटा सा उद्धरण, पृष्ठ 64. वह यह कहते हैं, जो इंजीलवादियों के बारे में सच है। वह कहते हैं कि जो विचार शास्त्र के प्रति वफादार होने का प्रयास करते हैं, उनका इंजीलवादी के रूप में सम्मान और आदर किया जाना चाहिए, तब भी जब इसके लिए इंजीलवादी सिद्धांतों की संभावनाओं की बहुलता की आवश्यकता होती है।

जो लोग इंजीलवाद के भीतर पूर्ण एकरूपता की मांग करते हैं, वे अपने साथी इंजीलवादियों के साथ-साथ शास्त्र पर भी एक तरह का बंधन थोपते हैं। यदि शास्त्र किसी मुद्दे को स्पष्ट नहीं करता है, तो यह बहस का विषय है कि वास्तव में वह मुद्दा कितना महत्वपूर्ण है। ईसाई धर्म के केंद्रीय और महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर शास्त्र स्पष्ट रूप से स्पष्ट है, लेकिन अन्य बातों पर, जैसे कि वास्तविक उपस्थिति की प्रकृति, जैसा कि अभी उल्लेख किया गया है, या पादरी की पोशाक की पसंदीदा शैली, यह विभिन्न प्रकार की राय के लिए खुला है।

सुधारक फिलिप मेलानचथन ने ऐसे मुद्दों को एडियाफोरा, उदासीनता के मामले के रूप में वर्णित किया, जिस पर असहमति को सहन किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। यह इस सामान्य धारणा के बराबर नहीं है कि सभी ईमानदारी से रखे गए दृष्टिकोण समान रूप से मान्य हैं, लेकिन यह एक इंजीलवादी आग्रह का प्रतिनिधित्व करता है कि सभी बाइबिल द्वारा वैध दृष्टिकोणों का सम्मान किया जाना चाहिए। इसलिए, एलिस्टेयर मैकग्राथ हमें याद दिलाते हैं कि इंजीलवादियों का धर्मग्रंथ के प्रति उच्च दृष्टिकोण है, लेकिन इंजीलवादी हमेशा धर्मग्रंथ की व्याख्या पर सहमत नहीं होते हैं।

फिर भी, वह अपने साथी इंजीलवादियों से कहता है कि अगर हम शास्त्र के कुछ विचारों पर असहमत हैं तो हमें एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए। इसलिए, उस वाक्य में, सभी दृष्टिकोणों का सम्मान किया जाना चाहिए। सभी बाइबिल द्वारा वैध दृष्टिकोणों का सम्मान किया जाना चाहिए।

इसलिए, बाइबल के प्रति उच्च दृष्टिकोण दूसरी चीज़ होगी जो कि इंजीलवाद की तरह है। तीसरा, या इंजीलवाद का तीसरा प्रकार, पवित्र आत्मा का प्रभुत्व होगा। अब, कुछ इंजीलवादियों ने शायद अन्य इंजीलवादियों की तुलना में पवित्र आत्मा पर अधिक जोर दिया है।

निश्चित रूप से, वेस्लेयन परंपरा ने पवित्र आत्मा पर जोर दिया। निश्चित रूप से, पेंटेकोस्टल परंपरा ने पवित्र आत्मा पर जोर दिया। निश्चित रूप से, करिश्माई परंपरा ने पवित्र आत्मा पर जोर दिया।

इसलिए निश्चित रूप से ऐसे और भी लोग रहे हैं, निश्चित रूप से ऐसे इंजीलवादी रहे हैं, कुछ इंजीलवादी जिन्होंने पवित्र आत्मा पर अधिक जोर दिया है। लेकिन सामान्य तौर पर, पवित्र आत्मा

का जोर इंजीलवादियों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इंजीलवादी त्रित्ववादी हैं। इसलिए, वे न केवल परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र में विश्वास करते हैं, बल्कि वे परमेश्वर पवित्र आत्मा और व्यक्ति के जीवन और चर्च के जीवन में परमेश्वर पवित्र आत्मा के कार्य में विश्वास करते हैं।

तो, पवित्र आत्मा पर जोर दिया गया है। ठीक है? नंबर चार वह है जिसके बारे में मार्क नूह ने बात की, सोला स्क्रिप्टुरा। उन्होंने व्यक्तिगत रूपांतरण के बारे में बात की।

अर्थात्, यीशु मसीह के साथ किसी प्रकार की पहचान निश्चित रूप से सुसमाचारवाद का एक और सिद्धांत है। वचन में मसीह की केंद्रीयता, वचन देहधारी हुआ, और मसीह के साथ विश्वासी की पहचान। अब, चाहे वह रूपांतरण कथा एक कथा हो, चाहे वह तत्काल रूपांतरण की कथा हो, आप जानते हैं, मैं उस दिन और घंटे और मिनट का नाम बता सकता हूँ जब मैं मसीह के पास आया, या फिर यह मसीह में बढ़ने की कथा है।

मेरा मतलब है, यीशु के साथ किसी के रिश्ते को समझाने के सभी तरह के तरीके हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि इंजीलवादियों के बीच, मसीह के साथ यह रिश्ता कहानी का, बाइबिल की कहानी का केंद्र है। और मैंने सोचा, फिर से, मैं मार्क नूह के इस आग्रह पर वास्तव में आश्चर्यचकित था कि परमेश्वर के वचन की प्राथमिकता लोगों को मसीह के पास लाना है।

और उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, आप जानते हैं, मुझे लगा कि यह बहुत बढ़िया था। ठीक है, एक और सिद्धांत है सुसमाचार प्रचार या इंजीलवाद को प्राथमिकता देना, इंजीलवाद को प्राथमिकता बनाना। अब, इंजीलवाद करने के सभी तरह के तरीके हैं।

बिली ग्राहम का तरीका है। आप जानते हैं, वह बड़ी सभाओं में लोगों को मसीह के पास बुलाते हुए, और इसी तरह के अन्य कामों में बहुत बढ़िया थे। या हमने जोनाथन एडवर्ड्स या व्हिटफील्ड या फिन्नी, अब ग्राहम या मूडी जैसे लोगों के साथ कोर्स में ऐसा देखा है। सुसमाचार प्रचार करने के और भी तरीके हैं।

मार्क नूह एक विद्वान हैं, लेकिन, आप जानते हैं, अपने तरीके से, वे एक प्रचारक हैं, जो अपनी विद्वत्ता और अपने व्याख्यानो आदि के माध्यम से लोगों को मसीह के पास लाते हैं। तो, प्रचार करने के बहुत से तरीके हैं, लेकिन प्रचार करना प्राथमिकता है। ओह, और शनिवार को एक पेपर में, उन्होंने अल्फा कोर्स का उल्लेख किया।

मुझे नहीं पता कि आप अल्फा कोर्स से परिचित हैं या नहीं। अल्फा कोर्स वास्तव में इंग्लैंड के एंग्लिकन चर्च से निकला था। यह अब अंतर्राष्ट्रीय है, लेकिन यह सुसमाचार प्रचार का एक तरीका है, स्थानीय चर्च द्वारा पड़ोसियों को चर्च में आमंत्रित करने का एक तरीका है ताकि वे रात्रिभोज करें और धार्मिक और ईसाई चीजों आदि के बारे में बात करें।

यह अल्फा कोर्स है। ऐसा लगता है कि आप इससे परिचित हैं, रूथ। क्या आपमें से बाकी लोग अल्फा कोर्स से परिचित हैं? यह एक एंग्लिकन है, यह इंग्लैंड में एंग्लिकन चर्च से बाहर है, और यह सुसमाचार प्रचार का एक तरीका है।

तो, यहाँ एक और तरह का सिद्धांत एक मजबूत सामाजिक विवेक है। अब, हम बस एक मिनट में फिर से इस बारे में बात करने जा रहे हैं, लेकिन जब आप इंजीलवाद को देखते हैं तो सामान्य रूप से एक मजबूत सामाजिक विवेक होता है। अगर आप इंजीलवाद के बारे में सोचते हैं तो इसकी जड़ें सबसे पहले वेस्लेयन आंदोलन और फिर पिएटिज्म में पाई जाती हैं, वेस्लेयन आंदोलन, 19वीं सदी के फिने जैसे पुनरुत्थानवादियों को ओगडेन गे जैसे लोगों के साथ लाया जाता है।

सामान्य तौर पर, एक बहुत मजबूत सामाजिक विवेक रहा है। अब, सवाल यह है कि क्या हमने इंजीलवादियों के रूप में उस सामाजिक विवेक को बरकरार रखा है? हम बस कुछ ही मिनटों में इसके बारे में बात करेंगे, लेकिन यह एक ऐसा सवाल है जिसे हम देखेंगे कि हमने इसे बरकरार रखा है या नहीं। इंजीलवाद का एक और प्रकार का सिद्धांत मान्यता है, और हमने यह सुना: क्या कोई टिमोथी जॉर्ज के पेपर में एक्यूमेनिज्म पर था? आप थे, जेसी।

कोई और? क्या आप एक्यूमेनिज्म व्याख्यान में थे? खैर, उन्होंने बताया, यहाँ वे एक इंजीलवादी हैं जो एक्यूमेनिकल संवाद में शामिल हैं। वे इंजीलवाद में एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं, एक मान्यता कि सभी सत्य ईसाई धर्म में पाए जाते हैं, कि सत्य और प्रतिबद्धता कई संप्रदायों में पाई जाती है, और यह रूढ़िवाद में पाई जाती है, यह रोमन कैथोलिक धर्म में पाई जाती है, यह प्रोटेस्टेंटवाद में पाई जाती है। तो सत्य की इस तरह की मान्यता पाई जा रही है, और यह सुधारकों के समय से ही सच है।

जॉन कैल्विन और मार्टिन लूथर जानते थे और उन्होंने कहा कि वे बहुत प्रतिबद्ध रोमन कैथोलिक थे। वे रोमन कैथोलिक चर्च के पदानुक्रम से सहमत नहीं थे, लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि वे बहुत सच्चे, वफादार रोमन कैथोलिक थे। रूढ़िवादी परंपरा में वफादार लोग हैं; प्रोटेस्टेंट संप्रदायों में वफादार लोग हैं।

इसलिए ईसाई सत्य के प्रति इस तरह की प्रतिबद्धता इंजीलवादियों के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह सच है, जैसा कि एलिस्टेयर मैकग्राथ कहते हैं, क्योंकि यह सच है, इंजीलवाद ट्रांस-डिनोमिनेशनल है। इंजीलवाद सभी संप्रदायों में फैला हुआ है।

इसलिए वह इंजीलवाद शब्द का इस्तेमाल एक व्यापक शब्द के रूप में करता है, और जिन सिद्धांतों के बारे में हमने बात की है, वे कई संप्रदायों में पाए जा सकते हैं, इसलिए वह सोचता है कि यह महत्वपूर्ण है। हालाँकि, वह पुस्तक में जो करता है, वह यह पहचानता है कि इंजीलवादियों के विभिन्न प्रकार हैं। वह इंजीलवादियों की विभिन्न किस्मों के बारे में बात करता है।

लेकिन किसी भी मामले में, एक आंदोलन के रूप में इंजीलवाद स्वयं ट्रांस-डिनोमिनेशनल है, इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है। फिर, इंजीलवाद का एक अंतिम सिद्धांत, इससे पहले कि हम कुछ आलोचनाओं पर जाएं, यह समझने की कोशिश कर रहा है कि इंजीलवाद का भविष्य कैसा दिखता है, इंजीलवाद और ईसाई धर्म का भविष्य कैसा दिखता है। यह समझने की कोशिश करें कि इंजीलवाद का भविष्य कैसा दिखता है।

और एलिस्टेयर मैकग्राथ ने इंजीलवाद के भविष्य के बारे में बहुत सी बातें बताई हैं, लेकिन आगे बढ़ने के बारे में दो बातें खास हैं, और उन दोनों के बारे में आपने सप्ताहांत में सुधार सम्मेलन में कई पत्रों में सुना होगा। तो, नंबर एक, भविष्य में इंजीलवाद, अपने भविष्य में इंजील आंदोलन, यह समझने की कोशिश कर रहा है कि इंजीलवाद सार्वजनिक नीति को आकार देने में कैसे मदद कर सकता है क्योंकि इंजीलवादी इस विश्वास के लिए प्रतिबद्ध हैं कि यह अंततः भगवान की दुनिया है, और सच्चा आस्तिक इस दुनिया के लिए एक राज्य की दृष्टि लाने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। और एक राज्य की दृष्टि लाने के तरीकों में से एक सार्वजनिक नीति में शामिल होना है।

तो, यह एक बात है जिसका उल्लेख एलिस्टेयर मैकग्राथ ने यहाँ किया है। तो, दूसरी बात, ज़ाहिर है, जिसका उन्होंने उल्लेख किया है कि जब नैतिक और नैतिक मुद्दों की बात आती है तो इंजीलवादी अन्य लोगों के साथ जहाँ संभव हो, आम जमीन पाते हैं। इसलिए, नैतिक मुद्दों पर आम जमीन की तलाश करने वाले इंजीलवादी, नैतिक मुद्दों पर, हम आम जमीन पा सकते हैं।

उदाहरण के लिए, इवेंजेलिकल कई नैतिक और नैतिक मुद्दों पर रोमन कैथोलिकों के साथ समान आधार पा सकते हैं। वे कई नैतिक और नैतिक मुद्दों पर पूर्वी रूढ़िवादी ईसाइयों के साथ समान आधार पा सकते हैं। इसलिए, जहाँ संभव हो, उस समान आधार को खोजें और आगे बढ़ें।

उदाहरण के लिए, इंजीलवाद और विश्वव्यापीकरण पर पेपर का एक हिस्सा रोमन कैथोलिकों के साथ समान आधार खोजना था। तो यह भविष्य के संदर्भ में अंतिम सिद्धांत है। तो, ठीक है, मुझे बस एक मिनट के लिए वहाँ रुकना चाहिए।

इंजीलवाद के सिद्धांत। क्या इंजीलवाद के सिद्धांतों पर कुछ लिखा है? अगर आप किसी को यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि इंजीलवाद क्या है और गॉर्डन कॉलेज किस बारे में है, तो ये कुछ सिद्धांत होंगे जो मैं लोगों को बताऊंगा। तो क्या यह समझ में आता है? अगर आप यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि यह क्या है, तो इंजीलवाद नाम की यह चीज़ क्या है? तो यही होगा।

यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि इंजीलवाद के लिए भविष्य का एजेंडा क्या है। इसलिए एलिस्टेयर मैकग्राथ जैसे लोगों ने अपनी पुस्तक इंजीलवाद और ईसाई धर्म का भविष्य में यही कहा है: हम कहां जा रहे हैं? हमें कहां जाना चाहिए? इंजीलवादियों, क्या हमें इसमें शामिल होना चाहिए? एलिस्टेयर मैकग्राथ का जवाब है कि हमें सार्वजनिक नीति के मामलों में शामिल होना चाहिए क्योंकि यह ईश्वर की दुनिया है, और हमें राज्य की खातिर ईश्वर की दुनिया को मुक्त करने के बारे में सोचना चाहिए। और सार्वजनिक नीति, शायद इंजीलवादियों को इसमें शामिल होना चाहिए।

मैं बस इसका एक छोटा सा उदाहरण देता हूँ। क्या आपको याद है कि हमने वाल्टर रौशनबुश का ज़िक्र किया था? क्या किसी को वह नाम याद है? मुझे उम्मीद है, प्रार्थना है, भरोसा है, और विश्वास है कि आपको याद होगा। ठीक है, वह सामाजिक सुसमाचार आंदोलन के जनक थे, लेकिन जैसा कि हमने बताया, रौशनबुश की हालिया जीवनी उन्हें एक इंजीलवादी के रूप में पहचानती है।

खैर, सिर्फ़ इसलिए कि वह इंजीलवादी था, वाल्टर रौशनबुश को न्यूयॉर्क शहर और फिर रोचेस्टर, न्यूयॉर्क में सार्वजनिक नीति बनाने की कोशिश करने से नहीं रोका, जहाँ उसने आखिरकार अपना जीवन बिताया। इसने उसे आवास और बेहतर आवास पर सार्वजनिक नीति बनाने की कोशिश करने से नहीं रोका। दूसरे शब्दों में, उसने यह नहीं सोचा कि सिर्फ़ इसलिए कि मैं एक इंजीलवादी हूँ, इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे ऐसी सार्वजनिक नीति में शामिल नहीं होना चाहिए जिसका संबंध लोगों के लिए आवास को बेहतर बनाने और आवास की स्थिति में सुधार करने से है।

और मुझे पता है कि रूथ ने लोअर ईस्ट साइड टेनमेंट म्यूजियम देखा है क्योंकि हमने उसके बारे में बात की थी। और अगर आपने देखा है कि वाल्टर रौशनबुश ने क्या देखा, तो आपको पता चल जाएगा कि वह बेहतर आवास के सार्वजनिक नीति मुद्दे में क्यों शामिल हुआ। तो, वह वास्तव में लोगों के लिए बेहतर आवास पाने के लिए राजनीतिक रूप से शामिल हुआ, लेकिन उसने इसे किसी भी तरह से इंजीलवाद के रूप में नहीं देखा, एक अच्छा ईसाई नहीं माना।

तो यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। यहाँ कुछ और भी है। ठीक है, तो ये सिद्धांत हैं।

ये वे बातें हैं, जिन्हें आप जानते हैं, अगर लोग आपसे पूछें तो आप इंजीलवाद की पहचान इसी तरह कर सकते हैं। अब, आइए नंबर ई पर चलते हैं। इंजीलवाद की कमजोरियों के बारे में क्या? हम सबसे कमजोर कहां हैं? हमें कहां मदद की जरूरत है? तो, जब इंजीलवाद की कमजोरी की बात आती है, तो अच्छी खबर यह है कि कमजोरियों को इंजीलवादियों द्वारा इंगित किया जाता है। इंजीलवादी खुद ही वे लोग हैं जो इंजीलवाद को देखते हुए कमजोरी को इंगित करते हैं।

और याद रखें, हमने कहा कि एक महान धर्मशास्त्री को बनाने वाली चीजों में से एक यह है कि आप अपनी समस्याओं और अपनी खुद की चीजों के बारे में जानते हैं जिन्हें आपको कहना चाहिए था और नहीं कहा आदि, टेलीविजन प्रचारक के विपरीत। भगवान ने आज सुबह उपदेशक से बात की। वह आज रात आपसे बात कर रहे हैं, लेकिन कभी भी किसी भी तरह से, मैं कहाँ गलत हो सकता हूँ? मैं कहाँ गलत हो सकता हूँ? मुझे कहाँ सुधार की आवश्यकता हो सकती है? मुझे कहाँ मदद की आवश्यकता हो सकती है? इसलिए, मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि ये कमजोरियाँ वे कमजोरियाँ हैं जिन्हें इंजील विद्वानों ने हमें बताया है।

इसलिए, हमें इन कमजोरियों के बारे में पता होना चाहिए। ठीक है, ये हैं। मुझे लगता है कि मैंने इनमें से चार का चयन किया है।

नंबर एक, चर्च की समृद्ध परंपरा की सराहना करने में विफलता। मुझे लगता है कि यह इंजीलवाद की कमजोरी है। चर्च की समृद्ध परंपरा की सराहना करने में विफलता।

यह चर्च 2,000 साल पुराना है। इसके इतिहास में बहुत समृद्धि है। इसकी परंपरा में बहुत समृद्धि है।

इसकी पूजा पद्धति में एक समृद्धि है। और अक्सर, इंजीलवादी इसकी सराहना करने में विफल रहते हैं। इंजीलवादी इस तरह बात करते हैं जैसे कि भगवान ने मेरे छोटे से स्थानीय चर्च से चर्च की शुरुआत की हो।

यहीं से उन्होंने इसकी शुरुआत की। और इसकी कोई समझ प्रेरितों के काम की पुस्तक तक नहीं पहुँचती। और परंपरा में उस समृद्धि की कोई समझ नहीं है।

तो, याद कीजिए हवाई जहाज़ पर मेरे दोस्त, एंडी वंडेनबर्ग, आप जानते हैं, वह एक ऐसी जगह पर आया था जहाँ उसका छोटा सा 120-सदस्यीय चर्च, जहाँ तक उसका संबंध था, दुनिया का एकमात्र चर्च था, दुनिया का एकमात्र सच्चा चर्च। बाकी सब धर्मत्यागी था। अगर आप अपने जीवन में उस बिंदु पर पहुँच जाते हैं, तो मुझे लगता है कि आप बहुत बुरी स्थिति में हैं।

लेकिन इंजीलवाद अक्सर ऐसा करता है। यह अक्सर उस जाल में फंस जाता है। इसलिए, हम चर्च की समृद्ध परंपरा की सराहना करना चाहते हैं।

हम इसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहते, आप जानते हैं। भगवान ने चर्च के 2,000 साल के इतिहास में शक्तिशाली तरीकों से काम किया है, इसलिए ठीक है, नंबर दो, 19वीं सदी की इंजील परंपरा की सामाजिक प्रतिबद्धताओं के प्रति वफादार रहने में विफलता।

अब, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। यह उस समय एक ब्लॉकबस्टर थी। इसे पुनः प्रकाशित किया गया है।

यह डोनाल्ड डेटन नाम के एक व्यक्ति द्वारा लिखा गया था। डोनाल्ड डेटन ने डिस्कवरिंग एन इवेंजेलिकल हेरिटेज नामक एक पुस्तक लिखी थी। तो डोनाल्ड डेटन, जो फिर से एक और इवेंजेलिकल है, खुद को एक इवेंजेलिकल और एक बेहतरीन इतिहासकार कहता है।

डोनाल्ड डेटन ने 19वीं सदी को देखा, और 19वीं सदी में इंजीलवादियों के बीच उन्हें क्या मिला? उन्होंने 19वीं सदी में, 19वीं सदी में, ऐसे इंजीलवादी पाए जो गुलामी के खिलाफ पूरी तरह से प्रतिबद्ध थे, जो गुलामी के खिलाफ पूरी तरह से लड़े, और उन अन्य गुलामी विरोधी लोगों के साथ हाथ मिलाया जो जरूरी नहीं कि इंजीलवादी थे, जरूरी नहीं कि ईसाई भी हों। लेकिन उन्हें फिने जैसे इंजीलवादी मिले जो पूरी तरह से गुलामी के खिलाफ थे। उन्हें ऐसे इंजीलवादी मिले जो महिलाओं और पुरुषों की समानता के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध थे, जैसे कैथरीन बूथ, बाइबिल की वजह से, बाइबिल के बावजूद नहीं, बल्कि बाइबिल की वजह से।

19वीं सदी में उन्होंने पाया कि ये इंजीलवादी महान सामाजिक कारणों के लिए प्रतिबद्ध थे। 20वीं सदी के मध्य में जब उन्होंने अपनी किताब लिखी तो उन्होंने पाया कि इंजीलवादी सामाजिक कारणों से पीछे हट गए थे और सामाजिक कारणों में शामिल होने से डरते थे। उन्हें यह बात बहुत शर्मनाक लगी और इसलिए उन्होंने डिस्कवरिंग एन इवेंजेलिकल हेरिटेज नामक किताब लिखी।

इंजीलवादी विरासत क्या है? इंजीलवादी विरासत यह है कि इंजीलवादी सामाजिक मंत्रालय में शामिल होते हैं। हम ईश्वर से प्यार करते हैं, और हम अपने पड़ोसी से प्यार करते हैं, और अपने

पड़ोसी से प्यार करने का मतलब गुलामी विरोधी व्यक्ति होना हो सकता है। इसका मतलब पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकारों के लिए एक व्यक्ति होना हो सकता है।

इसका मतलब नागरिक अधिकार आंदोलन में शामिल होना हो सकता है। किताब लिखते समय उन्हें जिस बात ने सबसे ज़्यादा चिंतित किया, वह यह थी कि बहुत से इंजीलवादी 60 के दशक के नागरिक अधिकार आंदोलन में शामिल नहीं थे। वे इससे पीछे हट गए।

वे इससे कोई लेना-देना नहीं चाहते थे। उन्हें लगता था कि वे इससे कलंकित हो जाएंगे, वगैरह। इसलिए, डोनाल्ड डेटन, डिस्कवरी एन इवेंजेलिकल ट्रेडिशन।

वैसे, डेटन की किताब से कहीं ज़्यादा हाल ही में एक और किताब आई है। हाँ, यह मेरे पास आएगी, लेकिन यह बहुत दिलचस्प है। ठीक है, नंबर तीन।

निश्चित रूप से, इंजीलवादियों के बीच बौद्धिक उथल-पुथल है। इंजीलवादी बौद्धिक रूप से उथले रहे हैं। हमने हमेशा अपना काम, अपना होमवर्क वैसा नहीं किया जैसा हमें करना चाहिए था।

इस पुस्तक, द स्कैंडल ऑफ द इवेंजेलिकल माइंड का उल्लेख सम्मेलन में दो बार किया गया। मार्क नोल ने यह पुस्तक, मुझे लगता है, 1990 में लिखी थी। फिर से, यह एक ब्लॉकबस्टर थी।

पुस्तक का पहला वाक्य यह है कि इंजीलवादी मन की समस्या यह है कि इसमें बहुत कुछ नहीं है। अरे, आप जानते हैं, यह एक इंजीलवादी है जो अपने साथी इंजीलवादियों को बता रहा है कि यहाँ एक घोटाला है, और हम अपना होमवर्क नहीं कर रहे हैं, और हम सबसे अच्छे प्रथम श्रेणी के विद्वान नहीं बन रहे हैं जो हमें होना चाहिए। और इसलिए, आइए हम खुद पर काबू पाएं और वह सब बनें जो परमेश्वर ने हमें बनने के लिए चाहा है, अपने मन से परमेश्वर से प्रेम करें।

और इसलिए, इस पुस्तक का, मेरे लिए यह बताना कठिन है कि इस पुस्तक का इंजीलवादियों पर क्या प्रभाव पड़ा। यह इंजीलवादियों के लिए एक चेतावनी थी। हम वह नहीं हैं जो परमेश्वर चाहता है कि हम बनें।

आइए हम इस पर काबू पाएं। तो, आप जानते हैं, अब, 20 साल बाद, आपको इस तरह के सम्मेलन मिलते हैं, और मुझे लगता है कि मार्क इस बात से खुश हैं कि इंजीलवाद ने क्या हासिल किया है। लेकिन इसका एक कारण यह भी है कि उन्होंने हमें चुनौती दी।

और अब, मुझे दूसरी किताब का नाम याद आ गया है जिसके बारे में मैं आपको याद दिलाना चाहता था। अगर मैं लेखक को याद कर पाऊं, तो वह मुझे याद आ जाएगा। लेकिन जब सामाजिक चेतना की बात आई, तो उन्होंने द स्कैंडल ऑफ द इवेंजेलिकल कॉन्शियस नामक किताब लिखी।

उन्होंने मार्क नोल के शीर्षक को लिया और उसमें थोड़ा बदलाव करते हुए इसे 'द स्कैंडल ऑफ द इवेंजेलिकल कॉन्शियस' नाम दिया, ताकि यह दिखाया जा सके कि हमारे पास वह सामाजिक

विवेक नहीं है जो हमारे पास होना चाहिए। और लेखक मेरे पास आने वाला है। मैं चाहता हूँ कि वह आए, लेकिन अभी ऐसा नहीं है।

लेकिन ईस्टर्न में कई सालों तक पढ़ाया। तो, ठीक है। लेकिन वैसे भी, यही बौद्धिक उथल-पुथल है जो इंजीलवादियों के साथ एक समस्या है, ठीक है? और मैं बस एक और बात का उल्लेख करना चाहता हूँ, और वह है संस्कृति के लिए एक समायोजन, संस्कृति के लिए एक समायोजन।

इवेंजेलिकल ने संस्कृति को समायोजित कर लिया है। हम अब संस्कृति से बात करने वाले भविष्यवक्ता नहीं हैं, संस्कृति को जवाबदेही के लिए बुला रहे हैं। हम बस संस्कृति की तरह ही हैं कि हम अपने और सामान्य व्यापक संस्कृति के बीच अंतर नहीं बता सकते।

और इसलिए, डेविड वेल्स, जिन्होंने गॉर्डन-कॉनवेल थियोलॉजिकल सेमिनरी में वर्षों तक पढ़ाया, ने गॉड इन द वेस्टलैंड, द रियलिटी ऑफ ट्रुथ इन ए वर्ल्ड ऑफ फेडिंग ड्रीम्स नामक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक एक इंजीलवादी, डेविड वेल्स द्वारा अपने साथी इंजीलवादियों पर संस्कृति के आगे झुकने और पर्याप्त रूप से प्रति-संस्कृति न होने के लिए एक तीखा हमला है। और इसलिए आप इस पुस्तक के कुछ भाग पढ़ेंगे, और यह आपकी सांसें रोक देगा।

लेकिन यह फिर से एक चेतावनी थी। इसलिए, इंजीलवादियों की इन कमज़ोरियों के बारे में अच्छी बात यह है कि इंजीलवादी यह देख रहे हैं कि इंजीलवाद इंजीलवादियों से क्या कह रहा है: देखो, हमें यहाँ जागना होगा। हमें वह बनना होगा जो परमेश्वर ने हमें बनने के लिए चाहा है।

इवेंजेलिकल कॉन्शियसनेस के घोटाले के लिए नाम अभी भी मेरे पास नहीं आएगा। कोई भी व्यक्ति इसे मेरे लिए अपने कंप्यूटर पर तुरंत जाँच सकता है, हालाँकि, जाने से पहले। साइडर, रॉन साइडर, साइडर, रॉन साइडर, इवेंजेलिकल कॉन्शियसनेस का घोटाला।

ठीक है। खैर, हमारा आखिरी व्याख्यान, इससे पहले वाला, कट्टरवाद के बारे में था। हमने यह देखने की कोशिश की कि कट्टरवाद कितना महत्वपूर्ण है।

और अब, यह व्याख्यान एक तरह से कट्टरवाद से अलग होने पर है। यह इंजीलवाद है और दुनिया में इंजीलवाद कितना महत्वपूर्ण है। फिर से, बहुत से मुख्यधारा के ईसाई थे, जिन्होंने, जब इंजीलवाद का गठन किया गया था, तो नहीं सोचा था कि यह चीज़ बहुत लंबे समय तक चलने वाली है।

उन्होंने सोचा, ओह, इंजीलवाद, यह कुछ सालों तक ही रहेगा, और फिर आप इसके बारे में नहीं सुनेंगे। और अब हमारे पास एलिस्टेयर मैकग्राथ द्वारा इंजीलवाद और सभी ईसाई धर्म के भविष्य पर किताबें हैं। इसलिए, इंजीलवाद ने एक तरह से आखिरी हंसी उड़ाई है क्योंकि यह मजबूत है, लेकिन अगर हम वह सब बनना चाहते हैं जो ईश्वर ने हमें बनने के लिए कहा है, तो इसे इन आलोचनाओं से भी निपटना होगा।

ठीक है। इंजीलवाद पर क्या है? हमारे पास यहाँ लगभग एक मिनट है। अगला व्याख्यान, हम बुधवार को शुरू करेंगे, डिट्रिच बोनहोफर से लेकर वर्तमान तक के धार्मिक विकास पर है।

तो, हम यह देखना चाहते हैं कि हम अभी कहाँ हैं, 19वीं सदी के अंत से 20वीं सदी तक, और हम कहाँ जा रहे हैं। और मेरे पास इस पर काम करने के लिए दो से तीन दिन हैं। मेरे पास इस पर काम करने के लिए बुधवार और शुक्रवार हैं।

और फिर याद रखें, हम अगले सोमवार को नहीं मिलेंगे। तो, आपके थैंक्सगिविंग ब्रेक वीक के लिए, आपको पूरा हफ्ता मिल गया है। जब हम वापस आएंगे, तो हमारे पास पाँच व्याख्यान दिन होंगे, लेकिन हम सिर्फ़ एक दिन और व्याख्यान नहीं देंगे क्योंकि उनमें से दो बोनहोफ़र पर फ़िल्म बनाएँगे, और दो फाइनल के लिए तैयार हो रहे होंगे। तो, ठीक है, यह जल्दी खत्म हो जाएगा।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफ़ॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 24 है, इंजीलवाद।